प्रलम्बिका

डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'

Scanned with OKEN Scanner

प्रलम्बिका

संकलन लम्बी कविताओं का

डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'

रजनी प्रकाशन

दिल्ली-110051

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-88515-18-8

© : लेखकाधीन

प्रकाशक : रजनी प्रकाशन
5/288, गली नं. 5,
वैस्ट कांति नगर दिल्ली-110051
मोबाइल : 09891559037, 09868569037

मूल्य : ₹ 150.00

प्रथम संस्करण : 2018

शब्द संयोजन : राजेश लेज़र प्रिंट्स, दिल्ली-110032

मुद्रक : तरुण ऑफसेट
दिल्ली-110053

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

- सफेद कागज 9
- राष्ट्र संघ के बड़ों से 16
- लाइका 20
- भावी मनुष्य की प्रतीक्षा 23
- सन्नाटे की सोच 28
- स्वागत आने वाली पीढ़ी 33
- कवि और कविता 43
- असफल प्रतिलोम विवाह का अभिशाप : एक पुराकथा 48
- बीसवीं सदी ने कहा 69

Scanned with OKEN Scanner

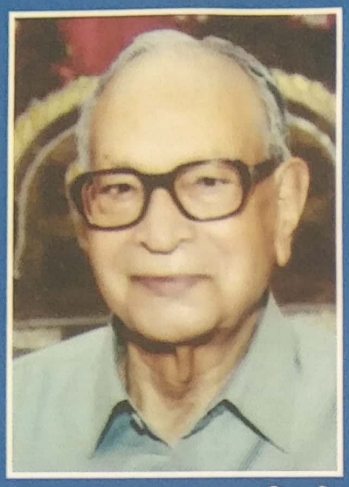

डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'

उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के तालबेहट नगर में 25 मार्च, सन् 1929 को जन्मे डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' की स्कूली शिक्षा तालबेहट और ललितपुर में हुई। सन् 1947 में आप कानपुर के तत्कालीन डी.ए.वी. कॉलेज में प्रविष्ट हुए। उच्च शिक्षा की सभी उपलब्धियाँ आपने आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। पी.एच-डी. अवार्ड होने के बाद सन् 1962 में आपने म.प्र. की उच्च शिक्षा में प्रवेश किया, महाविद्यालय शिवपुरी में पदस्थ हुए। सेवा-निवृत्ति तक आप शिवपुरी के स्नातकोत्तर महाविद्यालय में ही विभिन्न पदों पर रहकर अध्यापन कार्य करते रहे और हिन्दी साहित्य के शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते रहे।

वरिष्ठ पीढ़ी के रचनाधर्मी डॉ. विरही की रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं रेडियो तथा टी.वी. से प्रसारित होती रहती हैं, सन् 2009 में दूरदर्शन के भारती चैनल से श्री बालस्वरूप राही के सम्पादकत्व में 26 समकालीन कवियों की कविमाला—'गूँजते स्वर' के नाम से प्रसारित हुई थी, जिसके एक कवि डॉ. परशुराम विरही भी थे। इसमें प्रत्येक कवि पर केन्द्रित एपीसोड 30 मिनट तक प्रसारित होता था।

डॉ. विरही की कविताओं में युग-जीवन की संवेदनाओं की सूक्ष्म पकड़ है। उनका सम्पूर्ण साहित्य मौलिक भावाभिव्यक्ति, नवीन शिल्प-विधान, जीवन के प्रति स्वस्थ-दृष्टिकोण, अनूठे बिम्ब, प्रेरक सन्देश और गहन-अनुभूतियों का प्रामाणिक दस्तावेज है। उन्होंने सन् 1945 से कविता लिखना प्रारंभ किया था। इस कृति के प्रकाशन तक उनके 32 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें 22 मौलिक ग्रन्थ हैं। 3 अनूदित ग्रन्थ हैं और 7 सम्पादित हैं। इनके अतिरिक्त 11 ग्रन्थों में विरही जी सहयोगी रचनाकार हैं। आपके ग्रन्थों में कविता संकलनों की संख्या अधिक है, इनमें 'अनथके प्राण', 'ओ द्रष्टा मन' और 'अपने हिस्से का उजाला' चर्चित रहे। सम्पादित ग्रन्थों में 'सन् सत्तावन की क्रांति के पत्र' महत्वपूर्ण हैं।

आपकी सृजनशीलता को हिन्दी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान (दिल्ली), डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान (भोपाल), ईसुरी पुरस्कार (भोपाल), मैथिली शरण गुप्त पुरस्कार (लखनऊ), साहित्य गौरव सम्मान (जबलपुर), अक्षर आदित्य सम्मान (भोपाल), साहित्य मार्तण्ड सम्मान (ललितपुर), शोम सम्मान (कानपुर), अखिल भारतीय बुन्देली सम्मान (कोलारस) आदि अनेक सम्मानों ने सुशोभित किया है। बरकत उल्ला विश्वविद्यालय भोपाल और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से शोधार्थियों ने आपके साहित्यिक अवदान पर पी. एच-डी., उपाधियाँ प्राप्त कीं। साहित्य अकादमी दिल्ली के परिचय ग्रन्थ 'हूज हू ऑफ इंडियन राइटर्स' के आप एक हस्ताक्षर हैं। लखनऊ से प्रकाशित हिन्दी सेवी संसार के एक हस्ताक्षर।

Scanned with OKEN Scanner